

2605

67

नमो श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमः ॥

कतमागुरुमखेदासी

ॐ नमः ॥





॥ लुः मिलः मिताः क
नः गंधकः न भूति
॥ पत्रगंधः पत्रा म
गंधकः पत्रविधिः प
कापकाः गंधः क
न भूतिः वयसिः इमसि
जयपलः वयः द्याः
१०८ः कुरु उमधि
१ धलः कुरु उम ५
१८ः पथ सो ११४ स
साक्षिः विताः कुरु
॥ कुरु मः कुरु मः
कुरु मः कुरु मः
साक्षिः सो ११४
मः साक्षिः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शुभ ता ता साधव इल इल मा
सा मा ग्री आ सा न या इलः न डा
ना या या न लेः ॥ ॥ कवि ता वा
कवि वा ता ॥ वा ५ ल ६ व नि ल
मा ६ः व ल १ क ल सः ॥ उ मा प्र क उ
पः क पि र क के का वा १ १ १ १
न काः वा ता सः ल व लः डा न व ल
ल व च कि ॥ त उ न ले ॥ प च प
ल व ॥ प गा र र मा कः सि र
दा वा ॥ ॥ व ल १ व न नः व ल ६
ना गा वा ॥ ॥ गा न कि ॥ न क य क
दाः र र नि ध ल ॥ क सिः मा न
दा न द नः ॥ दा द सा मः ॥ क
न गा दाः ॥ लः स लः प वा
ना गाः मा नि कः स किः प ल
व का लः ॥ ता डा नः ध नि क्षि तुः

डा स क
सेः क ल
मे च स
नः प स
न लेः १
पः डा गा
से क
दा ला
मी ल
वि सि वि
न सि वि
म ल ५ क
दि गा प न
मीः १ प
अ नि ड



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धनदानपूजाकायविधिसा
सक्त्याः ॥ प्राणां विधिथाललानकाः धनपनाया
या ॥ धनलिस्तूर्यार्थया ॥ धनलिपूजागुत्तकल्पया
काः ॥ धनगुलमगुलदहधूनकाः ग्रहपूजाया ॥ ॥

धूपयाथ॥ ॥ॐ रुगवंशीमनू आदि स्थ द वनाश्रनाधनाय व
जधूपनिर्योन्यामि॥ ॥ जाप॥ ॥ॐ नमो आदि याय स्वाहा
ध्यान॥ ॥ॐ कर्त्तिनं पद्मानं हं रुद्रं कर्मलं वाहिनं बभूव
नका वने गङ्गाधरं च कलिंगदगकाशं पवजनात्मानं राव

यकू॥ ॥ धनस्वानवाथ॥ ॥ॐ आदि याय स्वाहा॥ ॥ यैव प्रसाजयू
जा॥ ॥ गकचन्द्रनमः गकजहनेमः गकयूष्यनमः॥ ॥ गो॥ ॥ॐ
मैलाकदीय संचरावचः दीयचक्रसत्वापकाः समयाजिनयू
धधर्मराना एविप्रबलयनाशनमस्तु॥ खाशुनंगदियं कया

सूर्यविमल

सूपादिः॥०॥थनश्वसयहपूजा॥॥धूप॥॥ॐरुगश्रीमग
श्रीश्वसदवताश्रावाधतार्थवज्रधूपनिर्याकयामि॥॥ऊ
प॥॥ॐनमाश्वसदवतायस्वाहा॥॥ॐदीरुजंववदाहसं
श्वेकवर्षदगावयदंमात्रंऊमूनागीनाहवंश्रायवय

मात्मानंरावयम॥॥थनस्नानवाय॥॥ॐश्वमाथस्वा
हा॥॥पंचप्रहारपूजाऊ॥॥श्वेकचतुर्नमाश्वेकगगंधना
माश्वेकपूषंनमः॥॥ऊ॥॥ॐदिमकंदंडुषामारुंडीना
दानवसंनिरुनमामिशगिनिरुकागंरुमकूटहयिकं

॥२॥ अ नमो गायत्र्य पूजा ॥ ॥ धूप ॥ ॐ ह ग व न्ना म न्ः नमो
वद व न्ना म्ना ध ना र्थ व क्थ प नि र्था न क या मिः ॥ ॥ जाय ॥ ॥
ॐ नमो गायत्र्य स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ न क व र्ध न क मा ल्य च उ र्ध
कं व द गं शि गू ल म ष वा ह नं । नमो गायत्र्य श्रु वं ह न द्वा ज व

उ र्ध नं मा त्मा नं रा व शं ॥ ॥ स्नान वा य ॥ ॐ न का ग कु मा
ला य स्वा हा ॥ ॥ पंच प हा न पू जा ॥ ॥ गाय ॥ ॥ ॐ ल क्मि शू र
प्र ति म ग ल ना मू ला क स पा द द्या न्च ज म शि यू नि द ह
शे म वि द्या प्र भ त्त क द ज नि गा र्थ ना रिः नि र्य न म

मुरुवस्थधनशीसूनाथ॥ ३ ॥ थनवृद्धयहयडा॥ ॥
धूम॥ ॥ उं रुगवंशीमनूवृद्धायवजधूपंनिर्याक्तया।
मिः॥ ॥ जाप॥ उं वृद्धायस्वाहा॥ ॥ ध्यान॥ ॥ पीतवर्ण
पीतमात्म्यं पीतवस्त्रं चरुं खंडं हस्तं च संदाधनं हस्तं वा

हस्तं गच्छदत्ता रुवं श्रीविंशतं पा मात्मानं रावयन्तु॥
थनस्नानवाय॥ ॥ उं वृद्धाय नमस्वाहा॥ ॥ पंचप्रहान।
पूजा॥ ॥ कीज॥ ॥ उं उत्पन्नं प्रजातं कनकवर्णं काय
गभक्तप्रसूनानासिददत्तमः॥ ४ ॥ थनहस्तमिहपू

ॐ ॥ धूप ॥ ॐ ह ग व गु म क ह स्य निम्ना ना धं तार्थ व
ज धूप निर्या कया मिः ॥ ॐ ॥ ॐ ह ग व गु म क ह स्य निम्ना ना धं तार्थ व
ह ॥ ॐ न ॥ ॐ पी क व र्ण पी मा स्व न धनः पी क मा ल्यं
व उ र्जं सा उ स य द लु क म लु त्ध नः सि ह द श्व ह वः कू

गिर श्व च उ म षा मा त्मा नं ला व य ॥ ॥ स्नान वा य ॥ ॐ
ह स्य न य स्वा हा ॥ ॥ य च य हा न पू जा ॥ ॥ पी क च त्दं न म
पी क ज हं न नः पी क प र्ण न म ॥ ॥ नो ॥ स त्या त्रि जा न
क म ल सं यु न दे व ना जः चू ज म लि पु नि वि ना डि क या लि प

नवावस्थानं गीतं नमस्तु ताय चायुषिथजनयजसहि
मष्टयूथः ॥ ॥ धनशूकपूजा ॥ ॥ धूप ॥ ॐ हगवनथासः
नशूकदेवताशानाधर्नाथवज्रधूपनिर्यातयासिहे ॥ ॥ ॐ
पी ॥ ॐ नमस्तु तायः स्वाहा ॥ ॥ ॐ श्वकवर्हश्वकमालचरः

ॐ वनजगूयदंदकमठलधनं रोजकटदश्वरुवर्गवव
जगमात्मानं रावथः ॥ ॥ स्नानवाथ ॥ ॥ ॐ शूकायस्व
हा ॥ ॥ पंचपहात्रपूजा ॥ ॥ ॐ श्वकचंद्रनमः श्वकजह्ननमः
श्वपूष्यनमः ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ दप्यादिनासूत्रवनाचिनयाद

पञ्चः शमस्तर्ह वावक न र स च समा रा ना किं गू क ष ग सु द धि
कृत् स व र्ह का कं रु रं न म सु द द ह वि स रं न रा स ॥ ॥ थ न
स नी श्व र प ज्ञा ॥ ॥ धू प ॥ ॥ उं ह ग व थ म न थ ग शि श्व र य
व न न्ना रा ध नार्थ व ज धू प शि र्या क्त या मि ॥ ॥ जा प ॥ ॥ उं न

म ग नि श्व रा य स्वा हा ॥ ॥ ध्म न ॥ ॥ उं ह कृ व र्ह कृ ह मा ल्यं
ध नं च उ र्ह जं व न जि गू र ध नं पा ग ध नं गृ ह पा ह रं सो रा रु द
श ह वं का ग्ध प व ष का या ग र्ह स ह रं क षा मा त्मा रा व थ ॥
स्वा न वा य ॥ ॥ उं ग नी श्व रा य स्वा हा ॥ ॥ पंच प ह न पू ज्ञा ॥ ४

ॐ कुरु नीच नमः हरी कुरु शय वीर नमः हरि नमः
नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॐ ह्रीं नमः निल नमः विन नमः चि नमः
कल्याण नील याम नमः मम नमः यक नमः शय नमः
हृदय नमः हृदय नमः हृदय नमः हृदय नमः ॥ ॥

थन नमः हृदय नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॐ हृदय नमः हृदय नमः
नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः

स्वानवाय ॥ ॥ ॐ कृष्णनाहवनमस्वाहा ॥ ॥ यंच पहात्र
पूजा ॥ ॥ कृष्णचन्द्रनमः कृष्णज्योतिषवीर्यनमः कृष्णपूष्य
नमः ॥ ॥ का ५ ॥ ॥ ॐ प्रियायधुमनयमादृशयः देवदा
नवकृष्णं जगत्किंशि पूजयः श्रवणं नरतावत्तमनूषासं हि

गायं हृदयहमलमध्वनमउरु ॥ ॥ यनकरुयह पूजा
धूप ॥ ॥ ॐ हृगवन्मया मरुः कउदवनाय आनाधनाथैव
जधूपनिर्याक्त्यामि ॥ ॥ का ५ ॥ ॥ ॐ कृष्णवदनमस्वाहा ॥ ४
ध्यान ॥ ॥ ॐ नमः कठवयथिमाहिमूखायः नमः आकरु

वाय॥ ॥ पूर्णमांजाजायः कषासात्मासंतावथम् ॥ ॥ स्तु
तवाय॥ ॥ कठवनमस्वाहा ॥ ॥ यंचपहानपूजा ॥ ॥ नास
विचिपचन्दनमः नानाविचिपऊहायविमंतमः नानावि
चिपपूष्यनमः ॥ ॥ माप ॥ ॥ उंलाकगूरागूरुः विलेख

पत्रिजनीयालिंगयदर्शय कियत्वमसिंपसन्नः कमा
कमान्नककइखसदायत्रियाजगदीकसखंकननमस
॥ ॥ थनऊन्मयहपूजा ॥ ॥ उंरुगवनूयासमऊन्मद
वनाम्नागाधनायवजधूपनिर्याकयाभि ॥ ॥ जाय ॥ ॥

ॐ जन्मदवनाय स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ जन्मदवनाय वेशा च
११ दवनाय सुकवर्ह सूर्या सनन ऊ ११ दवनाय न वा सात
रावथरु ॥ ॥ स्नानवाथ ॥ ॥ ॐ नमजन्मदवनाय स्वाहा
पंचपहाने पूजा ॥ ॥ श्वरच वनमः श्वरजहापवी ननमः

श्वरपूषा नमः ॥ ॥ ॥ ॐ ॥ जन्मकर्मसकलंच द
र्शनितित्यः आदित्य कादयान उयहः इ सु सात लो क स
दासु विपुत्रं यन मा यका नीरु क्का न मा मिति न सा न य
पादयमः ॥ ॥ थनलियह वलिविथ ॥ ॥ ॐ श्रीं नोदुर्क

लाग्निः चतुर्मुखः सखलः वधवहस्यनिः शूकगालिचनः क
कुल्यासपनिवात्रेयाः ४४ दं सद्य याशाचमस्यः पूष्यः धूपदी
पवलिचदास्यामिः सपिंत्वाष्टककुडिद्युक्तुहजं कुपिव
कुः हृष्टुष्टुदा नयनं सर्वसत्त्वाभं आयूनागार्धगान्तिपू

सिंधुनिषीमीचददध सर्वयादंरुक्तुवजधना आरूपय
निः स्वाहा ॥ ॥ पंचप्रहानपूजा ॥ दशुलियनिवात्रपूजाः थन
स्वानकिरुनः ॥ ॥ उंजपाकृगससंकाराकारधययं महाइ
किरुना नि सर्वपापघ्नप्रसामिदिवाकरं ॥ ॥ आदिथ ॥

ॐ हिमकुण्डुवावाहंजीशार्दनवसंनिवन्तमासिगगि
निरुक्तागंरुमकुटरुषिकं॥ ॥स्व॥ ॥ॐधवसीगर्ह
संरुक्तविद्युक्तजसमपरुःकुमात्रंगकिहसंचम्रंगभवंप
रमासिहं॥ ॥म्र॥ ॥ॐपियंगूकलिकास्यामात्रूपमा

पनिमंवृद्धः सोम्यसर्वगूत्तयक्तंनमासिगगिनिगूक्तं
॥ ॥व॥ ॥ॐदवात्तचगुत्तममृषित्तकाचनसन्निह
वम्रमूर्तिद्विलाकगपरासासिहहस्यनि॥ ॥व॥ ॥ॐहि
मकुण्डुमृगवाहंदेयानांपन्नगूत्तसर्वमास्तुप्रवक्तंचल

गर्वप्रसामिहं॥ ॥गु॥ ॥ॐ हिस्रजः। घुमिस्त्रुवविपू
आमहाकलंकायागर्हसंरुमंवदरुक्मगनिधयं॥ ॥ग
मूर्धकायंमाहाकजंचन्दादित्यपमर्दनैत्रोडत्रोडानिप्रो
डचमंनार्कंप्रसामिहं॥ ॥ग॥ ॥ॐ पलालधूमसंका

गतायाग्रहनमस्तुतः ध्यानधालानिधानवकंकड
प्रनमामिह॥ क॥ ॐ यजुस्तुहगकागसर्वदवः
नमस्तुतः सर्वहसर्वदादिव्यं जन्मप्रहनमास्य
ह॥ ॐ ॥ वृत्तिन्यादि॥ ॥ दानयनिकाय॥ थन

उमृयूजाः दक्षिणकाय॥ विलुनिसनाकाय॥ ऊ
ऊमानसिद्रलनमिचका॥ थनविगर्जनयाय
॥ थनदानपनिकाय॥ ॥ आदिन्यनिस्य॥ अ
याकाय॥ ॥ उ आदिन्यायकागधपयूजाय॥

अगमिदवनाय अमनकूलदवनाय ऊऊमा
नस्यसर्वाविष्टसामर्थी ॐ सात्रजनद्यदिकप्र
मिविवः सवत्स्रधनूदक्षिणउत्पमहप्रय ॥
गालिभान्यादिविहिप्राजंउयथावयान्महं ॥

॥ १ ॥ ॐ नमो नमो मायक्रिवास्त्रिसंरुताय नमो नमो
यसास्त्रनदवताय ऊऊमानस्ययहपिजाप्रगाय
थमायूष्मासनाथमिदप्रतिविवावृत्तऊरयादि
नगारविद्रदक्रिवास्त्रिसंरुताय नमो नमो ॥ ॐ दं ॥

गिनगिलहहियायदानं उपदाययास्यहं ॥ २ ॥
ॐ अंगाययहमिसरनाय ॐ नमो देवताय ऊऊ
मानस्यः अंगवयहपीजप्रअंणर्थं मायूष्मास
नार्थ ॐ मां वऊयगिनप्रतिविं व अश्वानगुणं

महसंयुय कामिन्द्र द्यटिन मूनवजन य।
मिष्टार्थः दक्षिण सयुय यया म्महं ॥ ३ ॥
उं वृद्धायः सामसूनाय ग्राहिति पूजाय वजस
यदिव नायः ऊजमानस्य वृद्धय ह पूजायिः

जयगान्धर्थाः ॐ मा नजत यमिन सवर्धद क्रि
मसयुय कामि सवर्धद क्रिम यति ष्टाद क्रि
मसयुय यया म्महं ॐ मा सिद्धार्थः वृद्धि या
ग्राहिसयुय यया म्महं ॥ ४ ॥ उं वृहस्पतः



रुमि सु माय श्व बुव दा द व गु वृ पा ध्मा यः अ ऊ
त्य द व मायः ऊ ज मानस्यः बृ ह स्प ति ग्र ह पि क
प्र सा न्म र्थः आ व का स नार्थः ॐ सा पि न वा स य
व स प्र य क मि पि न वा स प्र ति ष्टा द क्रि ल्म स

दा व या म्य हः ॐ मा य व पा नः द क्रि ल्म स प्र
प्र या म्य हः ॐ ॥ उं शु क्रा य रु गु सु मा य द न्य गु वृ
पा ध्मा य वै रा व न कू ल द व मा यः ऊ ज मानस्य ॥
गु क प्र ह न र्थः प्र ष म्म र्थः आ य व का स नार्थ

ॐ मानजस घटितः प्रविष्टः श्रुतिविद्वद्वि
त्तस्य यथासि श्रुतिविद्वद्विद्वत्सं प्रष्टा स्वया
न्यहः ॐ माकलाय वृद्धि प्राज्ञादि संप्रष्टा स्वयाः
मीह ॥ ६ ॥ उ न माशानि च नायः श्रुतिविद्वद्वि

यः सूत्रसूत्राय छायागर्हसूत्रनायडमिडविष
यसूत्रनायसूत्राय दवनायः जजमानस्यः ग
निचैत्रयहपिअप्रसायर्थः आयूषकासनार्थः
ॐ सांनजतद्यटितप्रतिविवृष्टधनसुखा

रुजभसहिमनः०० दंसरुतुल्यःनिर्यामियामि
०० मांमाषवहिप्राज्ञादिसंप्रदायाम्यहं॥॥
॥१॥ॐ नमोनाइवनमःश्रुमन्प्रियायसिंह
रुतायःकूलि(ग)वनदवतायःउमानस्यःनाइ

ग्रहपिण्डप्रगन्तार्थःश्रायूषकामनार्थः०० मांन
ऊरुद्यदितप्रमिर्विवःखर्जदक्षिणसंप्रयका
मिः०० मानिलुमाषवहिप्राज्ञादिसंप्रदायाम्य
मिहं॥८॥ॐ नमो कतव्यकास्यपसूनायव

ॐ नमानशयहाया॥ ॥ आदिष्यायविहिवास्य
रुया॥ ॥ आदिष्यायविहिस्वानशम॥ ग्रहयनि
सिद्धया मावासाः हाभाः लयासूयाविव॥ पचा
मृग॥ आउकायः चन्द्रमा॥ १ ॥ हायुहोमा॥

ग्रहयनिशरुयाचन्द्रमा॥ मर्हिगंखडिमधू
(क्षेइइरयाद्यत॥ लवयूकाय॥ १ ॥ ॥
थनमृगवयाविहि॥ पचाः चाका॥ लयाथू
सा॥ आउकाय॥ १ ॥ थनवृद्धयाविहिः ॐ

काः लयान ॥ ३ ॥ थन वृहस्पतिविहि ॥ म
०० का ॥ ग्रहपतिल ॥ कासकाय ॥ ४ ॥ थन
वृत्रयाविहि ॥ कथयुग्रहपतिअहयासन ॥
मायुकाय ॥ ५ ॥ थनगनिधनयाविहि ॥ सा

सा ॥ लः अहयासा ॥ नखावाः हमात्रिकां ॥ काउ
काय ॥ ६ ॥ थनगहयाविहि ॥ म्वातः नयाः
खड्ग ॥ ना ॥ हाककाय ॥ ७ ॥ थनकठुयावि
हि ॥ बाल ॥ लः अहयाबाल ॥ काउकाय

त्वयि वा न स दान ॥ ८ ॥ थ न ज न्न या वि हि ॥
आ क र ॥ मा यि जा ॥ अ रु या खा मा ॥ मा यू का यः
अ धू क्रि न या अ दान वि य ॥ ९ ॥ थु गि न अ ग्रं ह
या वि हि इ न ॥ अ रु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उ न मा यी व ज स ला य ॥ ॥ व भ य न क वि धि लि ख क ॥ थ
न लि क्रा पां अ र य या य ॥ ॥ थ न लि गू र्वा य या यः डि नि पा
ल इ इ कि न क ॥ १२ ॥ व र्क द न थ स यो का स न चा यः म न द्र स
कं ॥ सि न मः ॥ थ या क्रा उ न स र्ग म गु ल थ प ना या य ॥ थ न क
अ गू ल म गु ल द न क ॥ ॥ लो क पा ल व लि वि धिः थ न स र्ग

मथुलसकितन्य॥ ॥ सप्रयाय॥ ॐ उपाकुसुमसंकासंकासाय
यं महाइतिरुमावि सर्वपापघ्नं पुनमानिदियाक वं॥ ॥ थनस
थं मथुलससंखलखनहाथः॥ ॥ जाकिलंषकयाउपायार्थ
तथा॥ ॥ ॐ श्रीमन्मथुलाद्यादससूर्यदवहारुमवकायपा
द्यावमनार्थप्रतिकुस्वाहा॥ ॥ थस्वानवाय॥ ॥ ॐ मथाका

यस्वाहा॥ गीतासवस्वाहा॥ वक्रकुमालायस्वाहा॥ वृधायस्वाहा॥
लागस्यदायस्वाहा॥ अस्तुवाहमायस्वाहा॥ कक्रवर्तायस्वाहा॥
अमृतप्रियायस्वाहा॥ शान्तिकंठवनमस्वाहा॥ अर्मननमस्वा
हा॥ ॥ थननअपयानस्वानवाय॥ ॥ कृतिकायस्वाहा॥ मोहि
नियस्वाहा॥ मृगसिलायस्वाहा॥ आशायस्वाहा॥ पुनवसुयस्वाहा
पृष्ययस्वाहा॥ अस्त्रपायस्वाहा॥ मर्द्यायस्वाहा॥ पूर्वहोलानि

यस्वाहा॥ ॥ उरुवस्वाहा॥ निधस्वाहा॥ हस्तायस्वाहा॥ विज्ञायस्वाहा॥
स्वामिस्वाहा॥ विगमस्वाहा॥ मूनेवाधस्वाहा॥ अष्टाय
स्वाहा॥ मूलायस्वाहा॥ पूर्वाषाढायस्वाहा॥ उग्रषाढायस्वाहाः श्रव
नायस्वाहा॥ धन्यस्वाहा॥ उरुनरुडायस्वाहा॥ प्रवर्तिस्वा
हाः॥ मूनीयस्वाहा॥ रुनीयस्वाहा॥ ॥ धनलोकपालयानस्वा
नवाय॥ ॥ उं ष्टुनायस्वाहा॥ जर्मीयस्वाहा॥ ववृक्षायस्वाहा॥ कू

वेलायस्वाहा॥ मूत्रायस्वाहा॥ नेत्रायस्वाहा॥ वायूयस्वाहा॥ ष्टु
गनायस्वाहा॥ नागायस्वाहा॥ मूत्रायस्वाहा॥ वृक्षायस्वाहा
यस्वाहा॥ सूर्यायस्वाहा॥ पृथिव्यायस्वाहा॥ सर्वदिशोकपा
लायस्वाहा॥ ॥ धनवचनस्वानवाय॥ ॥ उं प्रविष्टानम
सविनायै नमः दिवाकत्राय नमः राकत्राय नमः नक्षत्राय
नाय नमः वंध्याय नमः स्कंधाय नमः मातृदय नमः रुवे

स्यवेनमः साहाननवचनमः पंचपहालपूजाः॥ ॥थनध
लमभुलथिले॥ ॥हाउसिद्धः हाउऊऊकाः हाउस्वानः॥ने
विधः धूपमरुयधर्मायाय॥ ॥थनसाइइनाथम्राऊऊन
स्यमृघयाचक॥ ॥मृयकाय॥ ॥उं नमरुगदयायका
स्यपूजायः द्वितीयगङ्गसहस्रनाथः चावृषसहिनाथः कर्क
नपयगागवधूककुसुमदगाय॥ मृमृगाकलदवनाथः न

कवासपूष्पधूपदिपगभ्रुगहृषविनाथः उग्रगत्रथसमा
नूधायः दवदानवधावकृम्रागुदाकिनिङ्गयसहिनाथः मृव
ननरुगवतैः दानपतिसहिनाथ॥ मृयगभ्रहमभुलमध
मृनृषवैगधठठदमृऊऊगगभ्रयूष्पः धूपदीपप्रहारवलि
चषतिगृङ्गनाथस्यकीपनपीतीकगौरवगानिपूष्पिक
नूमादिनाथमृयषतिक् स्वाहा॥ ॥थनसखपूजा॥ ॥

ॐ यमनिधनाय स्वाहा ॥ पंचप्रहरणपूजा ॥ थनवाधकया
क ॥ सगनकीयासिकलकायः कापकं सिद्धयकः सगनवि
यसिकलकायः किरन ॥ गूलपूजा ॥ दक्षिणकुमापन ॥ म
गुलविसर्जन ॥ थनसूर्यमगुलयास्वानकीकायाः
आसिर्वादेविश्वविगर्जनयानाविलक ॥ ४५ किष्क
वनिविधिसमाप्त ॥ ॥

ॐ नमो श्रीवज्रसत्वाय ॥ विवाहविधानचास्त्रकयाः कल
गसगधकगकः सिद्धमः वगलासः कामाविः थकः ककः
सिद्धः मोहनीः दिगलिवलिः अपिः धाकः मगथापनाधून
काः सूर्यार्धगुणावाध ॥ पूजाहलजापयक ॥ ग
लूमगुलदनः लहसिदनः कलगपूजामोहनिसाधनः का

मावि साधनः थन स चा क व लिनं पि या उ हयः स्व किक स स्व
नः गूल स द ल द नः ल ख व लि वि य वि ग र्ज न निला ड नः म र
रु ग ल च ॥ ॥ थन स मा ठ ल न ॥ ऊ उ न र या उ वि य ॥ ॥
विकं काल व य क ॥ चू सा पा रं स वा थ य हा वा थ य क ॥ थ कू क कि
वानं स ऊ न क ॥ रु उ न उ लि नं सि रु रु य कः हा व द स प प्या
व क ॥ कू म ल का नं द थु नि स्म हि त्थ ॥ १२ चू सा पा नं चू क

ग व ल ख नं मि खा पि य कः सि रु ल ला य कः ल न स रु य क यं
च व ध स्व नू पं पू ज या यः रु म कं क नः थन स गं वि यः थन च
स नं पू न कः म ह्नी क सी हा ख नः आ ग म मा ल का न यः गू ल
रुः थ का लि न्व कूः त कीः मा म वी वः ल मिः म ह्नी मा ल का
वि यः कू म्पा व जिः का ल व य कः ॥ थन सि रु ल यः व ड

वज्राक्षयः थचाकपूजाः दिगूलिवलिविथः ऊऊमानगू
लूमंदलदनकः स्नानकिरुनः गूलपूजादजिताः पंचाक
गः आगमकायकः गगनसिद्धमाहनिनायाः कलगभरि
षकः खारुकायः कामालिविसर्जनयायः कामालि
कायः हलिमचाद्रुत्तंसिलमूडानकाडाः दक्कपक

कायः॥ समयाचकः कलसूजायः रुत्तंसिलिमूलडा
काय॥ रुडनलिकारुयाचकः हलिमचायाकलडाका
माहनकातः लिकारुकायाय॥ स्वक्तिवाक्कायाय॥ ॥

ॐ नमो श्री वरु सखाय ॥ ॥ ग न्य म वं ऊ ग ल सर्व ग न्य ना क
वृ ना रु वं हि त्वा इ र्ग कि म हा रु ऊ ग क रं स्व धा ॥ ॥ ह म
ही र्व प गू जा तिः य स प च ष्ठ त्ति नं सं यु क रु या डी ची न
श्रः ग ध प च ष्ठ त्ति धी ल साः क र्ण ध य क्रा स य न इः च रु
ध य मि षा क न इः दि द य ध य नू ग ल क न इः पा द ध य

उ कि ला हा म क न इः थू कि यं च ष्ठ त्ति नं सं यु क रु या डी न श्र
व रु म हा का ल का स लि लः पि थि म नु ल स प पा उ कि नं चू या
डी यां स पू या डी न या डी रु डी म प गू ध यः ह नं थ प गू नं न य
ऊ क रु रुः सा क म सा क ध क ध य म रुः ह नं न य र्व न प स
पा कः सा प न्व क चि कू खा उ डि व या रु य डी ल ध क ध

यमसः हनंथथि मृपगूनं कुं कृ काया न धलसाः स्वक
ननेडोतिषाः मृपालसः वाड नाड सुडो नाडो मृनेगरे
वनायाथसः मृनेगलोकपनिस्थनं स्वनकाडोः थडो
जिडो नंदीनयायधकं कृ जाया नः हनं मृनेगपूजा
या नकाडोः मृनेगवायथेनकाडोः हनानासूगंधध

पदीपथनाडोः मृनेगनेविधः नानास्वानमात्राः पंच
प्रहावपूजाया नकाडो मृनेशदेवनायाथसपूजाया
नकाडोः जागदयकाडोः थडोगजिवदानयायधक
धलः कृ कृ दानयायधलसाः नकधयहिः मांस
धयलाः मृसिधयकंवः नाडो गध मृया नला दानविः

याऽऽऽऽ हि जा ग्व म्म या न हि ला ग्व वि याऽऽऽऽ कंच जा ग्व म्म या न
कंच ला ग्व वि याऽऽऽऽ ह नंच मं ध य कं गू जा ग्व म्म या न कं
गू ला ग्व वि याऽऽऽऽ थ थि ठ प्र का व र दा न या य ध कं धा लः
ह नं प गू इ ल सांः मू न ग द व ता या थ सः ना ना गू ग भ धू प
दि प ने वि थः वृ थ्या दि द या काऽऽऽऽ मि ऊ रु य वृ वृ का या नः

ह न ह म ही ख प स रु या नं म जिऽऽऽऽ न ल क च ल क स मि ग
रुऽऽऽऽ म्म प गु। ना ना न व ह नं पू जा या न काऽऽऽऽ म्म रु रुऽऽऽऽ व प म्म ह
म ही ख॥ क न स लिल नं या ना गू लि ध र्म गू लि न ह्ना य॥ ही ला ऊ
गू लि क चः थ थ्ना दा न या य ध कं धा लः थ थ्ना स सू या क व
म म इ ह म ही ख कं म नू क ल क प नि स नः थ गु जा म हा न उ
ध न ध कः थ सू या क व म्म म इः ह न ह म ही खः क नू म चा या उ

कृयायः ॥ मनुजलोक न वेतका अ कुतलिलनयनयायधक
हालः कुतधर्मया नायापयेन महाकुडाधनथासजर्मकायदयी
आहमहीत्वः ॥ गुलिजर्मसिथआथिथिगूमइ. सूर्यांकनूत्तमइ. कु
नसूरुका नंदानया नापुननं कुतनगथधलसा महाइहमपूय
लायीडाः ॥ धनिपादीनसतिथियागवागन ऊ ५ मिजइयाडा लिप
नमयथुइयाडाऊर्मकायमम्वाल. हंमहिरवकुतनयडा

काकास्वाधायालकाख. ॥ उलकास्वाधायाम् ४४ मा. स्वा
नास्वाधायाम् ४४. ॥ धिपिस्वतंहिलाकवनकाडा। म
फुलशालमुगुमिडातं. हनं हंमहिरवमिनऊमकाडाः
अनेगदवतामनुष्यनंरागपयातकाव. दानया नाया
पूयनं. सुखावतिरुवनसऊन्मका लडा न्यदत. हंमहि
ष. कुतगलिलनयनया नागुपूयधारव गुलितमय

गलपानमवपितं किंयकावधर्मयानागुखगलि
लनंदानयानागुखगुलिनकायः समुद्रमचोनखि
पतियाल्यारवकायकः अगुलिपुत्रयाल्यारवकाय
मरुहमहिरवः आसीसुर्गरुवनसेनामाडाठ्ठदयासा
हामसीताडी नपालमडलमधुद्वानपतितं माहा
रडीधमपूजायानधकं नानाधूपदीपदयेकावता

नापुष्पमालदयकाडी नानावाद्यदयकावनडीधनपु
जायानधकं कनमालहनेदसयान नानायाकदानप
तियाकआसिर्वाटवियमालहमहीखः स्वर्गरुवनसभ
सिमांरुनथागनयाकुलमममकेवाधिणतलानाडाची
नकुनीहमहीष ॥ ॥ ठ्ठमिमहीषपुमानसमाकी ॥ ॥ यत
हमपुजाविये ॥ ॥ चवाहांस्याय ॥ ॥ महीषमाचक ॥

श्रीगुरुदेवकी

[illegible]

॥ यत्राकिः स्नातं च दुःश्व नं पृष्यः धूपः शिखरः तं
गति दधिः कलनं हि काः वाकः समधिः पक्ति

४ लक्ष

ना गेवश्च न व सु ग स प ति श स या स त ॥ २

॥ गेवश्च न व सु ग स प ति श स या स त ॥ २

पतः न के व स नः न ग न पृष्यः धूपः शिखरः ग स

प ति शि श या दा सः मधि मल दः स्य सो नः वः शः

न क व सु ॥ २ वृष्य या वि ति शि काः धूपः शिखरः न

त स व र्णः व न र्ण शि व नः पा न र्ण्यः धूपः शिखरः

धकः त ग ति शि नः कल वा क मिः पल मधि

पक्ति ना सु व र्णः पा न व सु ॥ २ वृष्य या वि ति शि

॥ २ वृष्य या वि ति शि

॥ २ वृष्य या वि ति शि

वृद्धि नृपः तल्ल पृथ ता गः धूपः मधुः च
नः दधिः च नृगं ता च तल्ल पृथ ता गः धूपः दधिः
सर्वः तल्ल गतिर्ध्वं ताः गृह पतिपा नृवृष्टः
पकं उभनः खलु मधिः संसाः मा चः पा न व
मुः ५॥ ~~सुखं यो विधि~~ क प्र गः क्षत्रं कं सः त
ले सलः च नृगं खलु धूप क वि नः च न
पृथः च नृगं काः गृह पति गृह प्रा सलः त
गतिर्ध्वः दाकः च नः पकं उभनः कलि मधिः
स्य सा च नृगं नो य व रुः ~~च नृगं निव म पति~~

हिः मा गः ध्वं तल्लः तल्ल निलः चि नृगं गृह प्रा साः
स्य मजं काः स्य मपृथः धूप गधिः तल्ल गति
ताः ताः गृह पति काल सा मथ मधिः स्य सा द न

उम्व लुग ॥ ७ ॥ ना ह्यया वृत्तिः स्वातः धिनु मूल ॥
तत्त्वनाडा ता वः नु ज्ञाप्ति ॥ ताल्ल एषाः ताल्ल ऊका
धपः व्या मुः र्गतिः ना डाः हा मा विः गृह पति
न शा ख गिः पक डान र्गति न मधि स्य सा इ म
सिः हा कु व स्यः ॥ ८ ॥ के नु मा वि ति काल

नः धा नु क क न व ॥ तत्त्व क क न वः प्र नः प
व वरुः प व स नः पंच व र्ग पृथ्वः धू नः व्याल
र गृतिः ह्या डा मा माः दे देः गृह पतिः वाल
सः पक डान त स क ता स्य साः ना सिः हा न का प
॥ ९ ॥ इ म या वि तिः र्गति नुः धिनु ज्ञा हः तत्त्व
रु द किः व न गी ख र्गः हा न ऊका र्ग न पृथ्वः
धप क र्ग तः न गृह पति ज्ञा ॥ गृह पति स्या

॥ १ ॥ अथ वरुण उवाच ॥

२ श्रीमद्गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ५ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

[illegible]